दैनिक भास्कर, १८ जनवरी २००४, रविवार

मंदिर से परे हैं उनके राम

यह वह स्थान है, जहां 'नाम जप' में मौलिक रुप से 'स' का तीन स्वरों (पहला-स्मरण, दूसरा-संयम और तीसरा-सेवा) पर बड़ा महत्व है। स्मरण के अंतर्गत यथासंभव राम का नाम जपना होता है, ताकि राम हृदय में बस जाएं और आत्मा की शुद्धि हो जाए। संयम का अर्थ स्वनियंत्रण है, जिससे नैतिक व चारित्रिक शुद्धि हो और सेवा का अर्थ परमेश्वर का नाम जपना तथा दूसरों की खुशी के लिए उनसे प्रार्थना करना है, न कि धन का दान करने या किसी व्यक्ति विशेष की सेवा करने से है। सच पूछें तो यह आश्रम 'वसुधैव कुटुंबकम' पर विश्वास करता है। अब तो शायद आप समझ ही गए होंगे कि यहां हम किस आश्रम की चर्चा कर रहे हैं। जी हां, आपने ठीक समझा यहां हम 'श्री श्री राम शरणम् आश्रम' की ही चर्चा कर रहे हैं, जो राम के नाम पर आए दिन होने वाले कर्कश राजनीतिक कोलाहल से एकदम परे है।

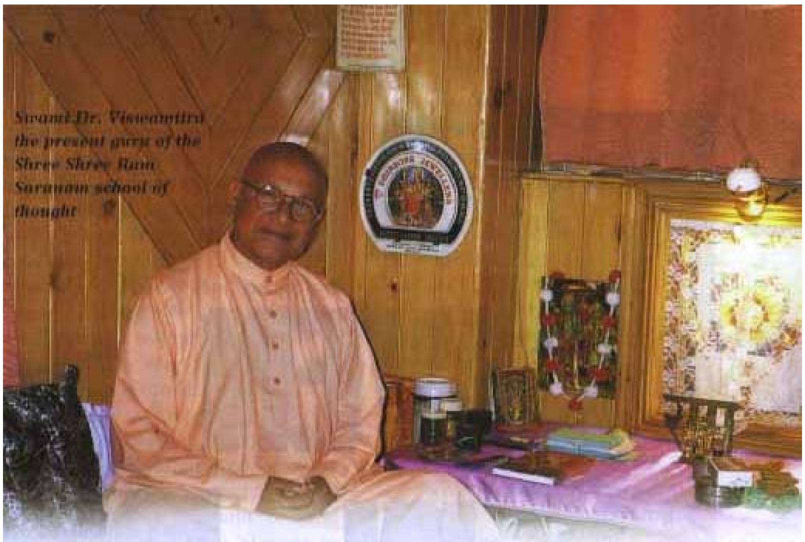

इस आश्रम की जिम्मेदारी फिलहाल डॉ, विश्वामित्र के कंधों पर है। यहां की जिम्मेदारी लेने से पहले वे दिल्ली के प्रख्यात अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में लगभग २२ वर्षों तक माइक्रो-बायोलॉजिस्ट के पद पर कार्यरत रहे और वहां भी उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली थी। अब वे हिमाचल प्रदेश के मनाली में रहते हैं। डॉ. विश्वामित्र के पहले यहां कि जिम्मेदारी प्रेमजी महाराज के कंधों पर थी, जो मूल रूप से होम्योपैथिक चिकित्सक थे और उन्हें चमत्कारी शक्तियों वाला चिकित्सक माना जाता था। इस आश्रम की स्थापना स्वामी सत्यानंद सरस्वती ने की थी। उनका जन्म १९१८ (वि.स.) पूर्णिमा के दिन रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ था। जब वे काफी छोटे थे, तभी उनके माता-पिता का निधन हो गया था।

अतः उनका पालन-पोषण चाचा के घर में हुआ। जब वे १७ साल के हुए, तो उन्हें कुछ जैन मुनियों से मिलने और बातचीत करने का अवसर मिला। तेज याददाश्त, चीजों की अच्छी समझ व समर्पण की भावना की वजह से शीघ्र ही उन्होंने जैन दर्शन और परंपरा का गहन अध्ययन कर लिया, मगर इस ज्ञान को उन्होंने खुद तक सीमित नहीं रखा, बल्कि बांटना शुरू कर दिया, जिससे उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली। फिर उन्होंने आर्य समाज को अपनाया और वहां वेदों का अध्ययन किया। इस क्रम में ही वे 'राम' नाम के गूढ़ रहस्य से परिचित हुए। राम नाम का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने इससे संबंधित तमाम जानकारियां एकत्र करनी शुरू कर दीं। वे कहा करते थे कि राम उस परमपिता परमेश्वर का नाम है, जिसके अधर पर आते ही सारे पाप धुल जाते हैं और मन पवित्र हो जाता है। उन्होंने इस नाम को आम आदमी से जोड़ने का फैसला किया, जो आगे चलकर 'श्री श्री राम शरणम्' की आधारशिला बना। 'श्री श्री राम शरणम्' का अर्थ है- खुद को राम की शरम में ले जाओ। आज दुनिया भर के लाखों लोग इस आश्रम से जुड़े हुए हैं। इन लोगों को इससे भी कोई मतलब नहीं कि किसी स्थान विशेष पर राम मंदिर बनता है या नहीं। उनके लिए तो राम का नाम ही खास महत्व रखता है और उसे ही वे जीवन का अंतिम सत्य मानते हैं। स्वामी सत्यानंद ने जीवन भर एक ही नाम को जपने के सिद्धांत को अपनाया। वे इसे वैज्ञानिक मानते थे। उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर वे बाहर राम नाम की 'ध्वनि' का व्यापक असर होता है। वे इसे एक ऐसे 'शोधरत वैज्ञानिक' की तरह देखते थे, जो राम नाम के महत्व को ही अंतिम सच मानता हो और यह भी कहता हो कि यह अनुभव का विषय है, जिसने इनका अनुभव कर लिया, उसने सर्वस्व

प्राप्त कर लिया। उनका कहना था कि इस स्थिति में राम नाम का जप करने से शरीर के भीतर ध्वनि ऊर्जा का प्रवाह बढ़ जाता है, जो मानव की तमाम कमजोरियों को शरीर से बाहर निकालकर उसे ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर करता है। स्वामी जी को १३ नवंबर १९६० को परिनिर्वाण प्राप्त हुआ। इसके बाद उनके सबसे करीबी शिष्य प्रेमजी महाराज ने इस पावन कार्य को संभाला। आश्रम के वर्तमान गुरु डॉ. विश्वामित्र कहते हैं कि इसका मूल उद्देश्य 'राम' नाम जपकर दिव्य ज्ञान प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि 'नाम योग' कि इस अवधारणा को मानने वाले हर व्यक्ति को ध्यान की मुद्रा में जाकर हृदय से 'राम' का नाम जपना होता है। इसके लिए तेज, मध्यम या धीमी आवाज को चुना जा सकता है। इस नाम को जपने से मन, मस्तिष्क व शरीर को असीम आनंद की अनुभूति होती है। इससे न सिर्फ मानसिक शांति मिलती है, बल्कि कई प्रकार की व्याधियों से भी मुक्ति मिलती है।

आलोक, भास्कर फीचर नेटवर्क